गज़ल

ज़माने को ख़बर क्या है यहां क्या बात मिलती है
फकत सज़दे में सतगुरू के इलाही बात मिलती है

1-यह वोह दर है यहां भेद नहीं जाति पाति का
यहां पर सोई आत्म को निजघर की बात मिलती है

2- यहां पर सुख अर्श के मिलते हैं मुतलकी होकर
हुई महबूब की नज़रें करम रूह की नजर खुलती है

3- खुले जो रूह की नजरें मिलें तब प्राणों के प्रीतम
मेरा दिल अर्श है तेरा कली तब रूह की खिलती है

4- पिया के चाहने वालों न भटको सब इधर आओ
मेरे प्रीतम की रहमत से हक की जात मिलती है

Nijanand App